एपीनिक 54 में सामुदायिक चर्चा के लिए चार नीतिगत प्रस्ताव रखे जाएँगे

एपीनिक 54 सम्मेलन में खुली नीति बैठक 15 सितंबर 2022 को आयोजित की जाएगी। यहाँ चर्चा किए जाने वाले चार नीतिगत प्रस्तावों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

प्रॉप-145: परिभाषाओं के लिए एकल स्रोत

यह प्रस्ताव सुझाव देता है कि सभी एपीनिक नीति दस्तावेजों में विशिष्ट शब्दों का उपयोग और विश्लेषण सुसंगत ढंग से सुनिश्चित करने के लिए एपीनिक एकल परिभाषा दस्तावेज का उपयोग करता है।

प्रॉप-146: अंतर को संरेखित करना

यह प्रस्ताव खंड 3.0 में एपीनिक इंटरनेट संसाधन नीति दस्तावेज के शीर्षकों और विवरणों को बदलने का सुझाव देता है। प्रस्ताव में निम्नलिखित खंडों पर प्रकाश डाला गया:

- खंड 3.1 संसाधन प्रबंधन के लक्ष्य
- खंड 3.2 नीतिगत परिवेश
- खंड 3.1.4 लगातार वितरण की गारंटी नहीं
- खंड 3.1.8 लक्ष्यों का संघर्ष

प्रॉप-147: ऐतिहासिक संसाधन प्रबंधन

यह प्रस्ताव सुझाव देता है कि ऐतिहासिक आईपीवी4 संसाधनों को उपयुक्त साबित किया जाए और इनका दावा किया जाए, या इन्हें ऐसे अन्य संगठनों को उपलब्ध कराया जाए जिन्हें इनकी आवश्यकता है।

22 फरवरी 2021 के ईसी संकल्प के बाद एपीनिक क्षेत्र में ऐतिहासिक संसाधन धारकों को पंजीकरण सेवाएँ प्राप्त करना जारी रखने के लिए 1 जनवरी 2023 तक सदस्य या गैर-सदस्य बनने की आवश्यकता होगी। इस तिथि के बाद ऐतिहासिक संसाधन पंजीकरणों को अब एपीनिक हूइज़ डेटाबेस में प्रकाशित नहीं किया जाएगा, और संसाधनों को आरक्षित स्थिति में रखा जाएगा।

प्रॉप-148: संसाधनों को लीज़ पर देना स्वीकार्य नहीं है

यह प्रस्ताव एपीनिक नीति में स्पष्ट रूप से सुझाव देता है कि एपीनिक क्षेत्र में आईपी पतों को लीज़ पर दिए जाने की अनुमति नहीं है। इसमें यह प्रस्ताव दिया गया है कि खाताधारकों को लीज़ पर पते देते हुए पाए जाने पर एपीनिक सचिवालय कार्रवाई कर सकता है।

भाग लें! अपनी बात सामने रखें

अच्छी नीति समुदाय के विभिन्न हिस्सों से आने वाले लोगों की राय पर निर्भर करती है, इसलिए इसमें शामिल होना महत्वपूर्ण है। अच्छी नीतियों को परामर्श और आम सहमति की एक खुली, पारदर्शी और नीचे-से-ऊपर जाने वाली प्रक्रिया के माध्यम से विकसित किया जाता है।

पॉलिसी एसआईजी मेलिंग सूची की सदस्यता लेकर या एपीनिक 54 पॉलिसी एसआईजी मंच के दौरान व्यक्तिगत या दूरस्थ रूप से भाग लेकर इन नीति प्रस्तावों के बारे में अपनी बात सामने रखें।